डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, यशायाह के सेवक गीत, सत्र 3 : प्रभु का पीड़ित सेवक (A) (यशायाह 50:4-6 और 52:12-53:12)

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म और यशायाह के सेवक गीतों पर उनकी शिक्षाएँ हैं। यह सत्र 3, प्रभु का पीड़ित सेवक, भाग अ है। यशायाह 50:4-6 और 52:12-53:12।

खैर, हमने पहले दो सेवक गीतों पर विचार किया है जहाँ प्रभु का सेवक, जो निर्वासित पापी इस्राएल से अलग है और जिसे याकूब भी कहा जाता है, न्याय का समर्थक है।

वह पृथ्वी और राष्ट्रों पर न्याय लाएगा। वह एक वाचा का मध्यस्थ बनेगा। वह परमेश्वर और राष्ट्रों के बीच एक वाचा की मध्यस्थता करेगा, एक तरह से नूह के आदेश की मरम्मत करेगा, और वह परमेश्वर और उसके वाचा के लोगों, इस्राएल, के बीच एक नई वाचा की मध्यस्थता भी करेगा और उन्हें मुक्ति दिलाएगा।

और दूसरे सेवक गीत में उस भूमिका में वह सचमुच एक नए मूसा की तरह लग रहे हैं। अब तक, विरोध के कुछ संकेत मिले हैं, शायद कष्ट भी। सेवक का काम आसान नहीं होगा, और हो सकता है कि कुछ लोग उसका विरोध करें और उसे कष्ट भी पहुँचाएँ।

और वह दुःख-बोध, जो पहले दो गीतों में, एक तरह से गौण रूप में, प्रस्तुत किया गया है, अब तीसरे सेवक गीत और चौथे सेवक गीत में केंद्रबिंदु बनने जा रहा है। तीसरा सेवक गीत यशायाह अध्याय 50 में है। तो यह पद 4 से शुरू होता है, और मैं इसे अभी पढ़ूँगा।

परमप्रभु प्रभु ने मुझे अपना प्रवक्ता बनने की क्षमता दी है। तो सचमुच, उन्होंने मुझे एक शिक्षार्थी की जुबान दी है। इसलिए वह प्रभु से सीखेगा और उसे दूसरों तक पहुँचाएगा।

इसलिए उन्होंने मुझे अपना प्रवक्ता बनने का अधिकार दिया है। और मुझे लगता है कि सेवक को पैगंबर मानने का मूल भाव यही है। हमने कहा कि सेवक एक शाही व्यक्ति है, लेकिन वह एक पैगंबर भी है।

वह प्रभु की ओर से बोलने वाला है, ताकि मैं जान सकूँ कि थके हुए लोगों की मदद कैसे करनी है। यह पहले सेवक गीत जैसा लगता है, जहाँ वह आकर उन लोगों की मदद कर रहा है जो टूटे हुए हैं और मौत के कगार पर हैं। वह मुझे हर सुबह जगाता है।

वह मुझे सचेत करता है, ताकि मैं शिष्यों की तरह ध्यान से सुन सकूँ। इस प्रकार वह प्रभु से सीख रहा है, और फिर वह प्रभु की इच्छा उन लोगों तक पहुँचा रहा है जो ज़रूरतमंद हैं, जो थके हुए हैं। परमप्रभु प्रभु ने मुझसे स्पष्ट रूप से बात की है।

मैंने विद्रोह नहीं किया। मैं पीछे नहीं हटा। तो सेवक कह रहा है कि प्रभु ने उसे चुना है, और वह अपना कार्य पूरा करने की प्रक्रिया में है।

प्रभु ने उसे एक कार्य सौंपा है, और वह उसके प्रति समर्पित है। और फिर छठा पद, मुझे लगता है कि यह अब तक के गीतों में हमारे द्वारा झेले गए कष्टों का सबसे स्पष्ट संदर्भ है। मैंने उन लोगों को अपनी पीठ अर्पित कर दी जिन्होंने हमला किया, और अपने जबड़े उन लोगों को जिन्होंने मेरी दाढ़ी नोंच ली।

मैंने अपमान और थूकने से अपना चेहरा नहीं छिपाया। और आप शायद इस समय सोच रहे होंगे कि सूली पर चढ़ने से पहले यीशु के साथ क्या हुआ होगा, जहाँ उन्हें इस तरह का अपमान सहना पड़ा था। लेकिन परमप्रभु मेरी मदद करते हैं, इसलिए मैं अपमानित नहीं हूँ।

इसीलिए, मैं दृढ़ निश्चयी हूँ। मुझे विश्वास है कि मुझे शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। यह यीशु की प्रार्थना हो सकती है क्योंकि वह अपने दुःखभोग में प्रवेश करने के लिए तैयार हो रहा है।

मेरा बचाव करने वाला पास ही है। मुझसे बहस करने की हिम्मत किसमें है? आओ हम एक-दूसरे का सामना करें। मेरा मुकदमा कौन कर रहा है? उसे मुझे चुनौती देने दो।

देखो, प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है। कौन मुझे दोषी ठहराने का साहस करता है? देखो, वे सब वस्त्रों की नाई पुराने हो जाएँगे। कीड़ा उन्हें खा जाएगा, उन्हें खा जाएगा।

और कुछ लोग सेवक गीत को वहीं रोक देंगे। वक्ता ने उसे सेवक के रूप में कहीं भी संदर्भित नहीं किया है। लेकिन अगर आप पद 10 और 11 में जाएँ, और कुछ लोग इन पदों को गीत का हिस्सा मानेंगे, तो आप में से कौन प्रभु का भय मानता है? कौन उसके सेवक की आज्ञा मानता है? ऐसा लगता है कि ये प्रश्न सेवक द्वारा अभी कही गई बातों की ओर संकेत कर रहे हैं।

कौन अपने सेवक की आज्ञा मानता है? जो कोई भी बिना प्रकाश के घोर अंधकार में चलता है, उसे प्रभु के नाम पर और अपने परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। यह लगभग ऐसा है जैसे यहाँ बोलने वाला कह रहा है, तुम्हें उस सेवक की बात सुननी चाहिए जिसने अभी-अभी बात की है। देखो, तुम सब जो आग जलाते हो और जलते हुए तीरों से लैस हो, अपनी जलाई हुई आग की रोशनी में और अपने द्वारा जलाए गए जलते हुए तीरों के बीच चलो, यही तुम मुझसे पाओगे।

तुम पीड़ा की जगह पर पड़े रहोगे। इसलिए अगर तुम पद 10 और 11 को शामिल करते हो, जो यह संकेत देते हैं कि तुम्हें उस सेवक के वचनों के मार्गदर्शन और उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए जिसे प्रभु निर्देश दे रहे हैं, तो तुम्हें यही करना होगा। अगर तुम ऐसा नहीं करते, जैसा कि सेवक ने कहा, तो प्रभु उसे निर्दोष ठहराएँगे, और जो लोग विद्रोह करते हैं और प्रभु के नाम पर भरोसा नहीं करते, वे उसके न्याय का अनुभव करेंगे।

तो यह तथाकथित सेवक गीतों का तीसरा गीत है, और हम निश्चित रूप से इस बिंदु पर दुःख के पूरे विचार में प्रवेश कर रहे हैं। और इसलिए मुझे लगता है कि आप इसे एक सेवक गीत के रूप में प्रमाणित कर सकते हैं क्योंकि पद 10 में जो कहा गया है। अगर आप इस गीत को उस जगह

से जोड़ दें जहाँ सेवक स्वयं बोल रहा है, 4 से 9 तक, 10 में जो कहा गया है, "तुम में से कौन प्रभु का भय मानता है? कौन अपने सेवक की आज्ञा मानता है?" विचार यह प्रतीत होता है कि यदि आप वास्तव में प्रभु का भय मानते हैं, तो आप वही करेंगे जो उसका सेवक कहता है, क्योंकि वह अपने सेवक को निर्देश दे रहा है।

लेकिन हमें कुछ ऐसी ही बातें देखने को मिलीं जो हम पहले भी देख चुके हैं। वह प्रभु का प्रवक्ता है। यह बात दूसरे गीत 49.2 की शुरुआत में कही गई थी। वह दुःख सहने को तैयार है, इस गीत के छठे पद में, और हम इसे अगले गीत में ज़रूर देखेंगे।

विरोध के बावजूद उनकी दृढ़ता, जिसका जिक्र पहले गीत 42:4 में किया गया है। और उनका यह विश्वास कि प्रभु उन्हें निर्दोष सिद्ध करेंगे, और यह दूसरे गीत में व्यक्त होता है, और जैसा कि हम चौथे गीत में देखेंगे। तो यह उस सेवक के मिशन और उसे कैसे पूरा किया जाएगा, इस बारे में हम जो देखते रहे हैं, उससे एक महत्वपूर्ण सेतु है। और पहले और दूसरे गीत में, हम बहुत आगे की ओर देख रहे हैं, जहाँ सभी राष्ट्र प्रभु के पास वापस आएँगे, और इस्राएल, पापी याकूब, प्रभु के पास वापस आएँगे।

वह राष्ट्रों और परमेश्वर के लोगों के साथ एक वाचा की मध्यस्थता करने जा रहा है। लेकिन ऐसा होने से पहले, जैसा कि उन गीतों में पहले ही संकेत दिया जा चुका है, विरोध होगा। और इसलिए यह चौथे गीत की ओर एक पुल है, जहाँ आप अब पूछ रहे हैं, अरे, सेवक इस तरह क्यों बात कर रहा है? मुझे इस विरोध और इस अपमान के बारे में और बताइए जिसका वह सामना कर रहा है।

लेकिन उसे पूरा भरोसा है कि प्रभु उसे निर्दोष ठहराएँगे, और यही हम चौथे सेवक गीत में देखेंगे। प्रभु सचमुच अपने सेवक को निर्दोष ठहराएँगे, लेकिन सेवक को कष्ट सहना होगा, और यह प्रभु ही होंगे जो उसे यह सब देंगे। तो आइए चौथे सेवक गीत की ओर मुड़ें, और इसे आमतौर पर यशायाह 53 ही कहा जाता है, लेकिन वास्तव में, यह गीत अध्याय 52 में शुरू होता है।

तो यह एक और उदाहरण है जहाँ अध्यायों का विभाजन आदर्श नहीं है। और किसी ने शायद सोचा होगा कि ये आयतें आगे की बातों से मेल नहीं खातीं, लेकिन ये स्पष्ट रूप से मेल खाती हैं, क्योंकि अगर हम अध्याय 52, आयत 13 से 15 को प्रभु के वचन के रूप में लें, तो प्रभु यहाँ अनिवार्य रूप से कह रहे हैं, मेरा सेवक सफल होगा, उसे ऊँचा किया जाएगा, उसने बहुत कष्ट सहे। उसने इतना कष्ट सहा कि अब वह इंसान भी नहीं दिखता था।

फिर भी, जिन राष्ट्रों ने उसे अस्वीकार किया, जिन राजाओं ने उसे अस्वीकार किया, वे स्तब्ध रह जाएँगे, क्योंकि मैं उसे निर्दोष ठहराऊँगा, और वह उनके राजा के रूप में उनसे ऊपर उठकर, ऊँचा किया जाएगा। अगर आप आगे की बातों को ध्यान में रखें, तो गीत की शुरुआत इसी तरह होती है, लेकिन अगर आप यशायाह 53 के अंत तक जाएँ, तो भी यही बात है। सेवक ने कष्ट सहे हैं, लेकिन मैं उसे प्रतिफल दूँगा और उसे निर्दोष ठहराऊँगा, और मैं उसे भीड़ के साथ भाग दूँगा, क्योंकि उसने स्वेच्छा से मृत्यु को स्वीकार कर लिया।

मैं उसे ऊपर उठाने जा रहा हूँ। तो ऐसा लग रहा है कि यह वही गीत है। हम इसे इन्क्लूसियो कहते हैं, जहाँ ईश्वर बोलते हैं, और शुरुआत में विषय वही है, सेवक का कष्ट लेकिन उसका उत्थान, सेवक का औचित्य सिद्ध करना, और फिर गीत के अंत में ईश्वर के बोलने के साथ यह फिर से प्रकट होता है।

और इसलिए मुझे लगता है कि इसीलिए आज ज़्यादातर लोग अध्याय 52 के अंतिम तीन छंदों को गीत का परिचय मानेंगे, जो गीत के समापन के अनुरूप है। सेवक के औचित्य का विषय इस अंश को कोष्ठक में रखता है, और जैसा कि मैं कहता हूँ, साहित्यिक आलोचक इसे एक समावेशन कहते हैं। हम इसे एक ढाँचा कह सकते हैं।

तो चलिए गाने के बारे में विस्तार से जानते हैं, और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, मैं उस पर टिप्पणी करता रहूँगा। और तो और, इसकी शुरुआत हिब्रू शब्द "हिने" से होती है, देखिए। यह ध्यान खींचने वाला एक तरीका है।

देखो। और यह प्रभु ही बोल रहे हैं, क्योंकि वे मेरे सेवक की ओर इशारा कर रहे हैं। तो देखो, मेरा सेवक सफल होगा, मैं इसका अनुवाद इस प्रकार करता हूँ।

दरअसल, इब्रानी में इसका मतलब बुद्धिमान होना है। मेरा सेवक बुद्धि दिखाएगा। बाइबल की बुद्धिमत्ता की सोच के अनुसार, अगर आप बुद्धिमान हैं, तो आदर्श रूप से आपको सफलता मिलेगी।

और अक्सर ऐसा ही होता है। बुद्धिमत्ता सफलता लाती है, मूर्खता आत्म-विनाश और तमाम तरह की नकारात्मकताएँ लाती है। तो यहाँ हमारे सामने मेटोनीमी है।

बुद्धिमान होना ही सफलता का कारण, परिणाम और प्रभाव है। मुझे लगता है कि इस संदर्भ में, यही प्रभाव है जिसे ध्यान में रखा जाता है। और इसलिए, देखिए, मेरे सेवक, आप इसे कुछ इस तरह से कह सकते हैं, बुद्धिमानी का परिचय देंगे और इसलिए सफल होंगे।

लेकिन एक अनुवादक के तौर पर, मैं उस तरह का इंसान नहीं बनना चाहता, इसलिए मैं सफल विचार चुनूँगा क्योंकि, अगली पंक्ति देखिए, उसे ऊँचा उठाया जाएगा, ऊँचा उठाया जाएगा, और बहुत ऊँचा किया जाएगा। ऐसा लगता है कि यह उसके कर्मों का प्रभाव है, कुछ ऐसा जो प्रभु उसके लिए करने जा रहे हैं क्योंकि वह प्रभु से मिले आदेश के तहत जो करने को तैयार था। तो ऐसा लगता है कि पद 13ख, पद 13 का दूसरा भाग, इस बात की व्याख्या करता है कि उसके लिए सफलता कैसी दिखती है।

और देखिए, यह कितना ज़ोरदार है। हिब्रू में, हमारे पास तीन अलग-अलग क्रियाएँ हैं जिन्हें हम समानार्थी कह सकते हैं। हमने, और मैंने, उनका अनुवाद किया है। उसे ऊँचा किया जाएगा, उसे ऊँचा उठाया जाएगा, और उसे ऊँचा किया जाएगा।

वे लगभग एक ही बात तीन बार दोहरा रहे हैं। अगर आप खुद को दोहराते हैं, तो वह ज़ोरदार है। लेकिन जब आप किसी चीज़ को तीन बार दोहराते हैं, तो वह बहुत ज़ोरदार है।

और फिर, अच्छे उपाय के लिए, इब्रानी लेखक ने me'od का इस्तेमाल किया है। दरअसल, प्रभु बोल रहे हैं। इसका बहुत मतलब है।

तो उसे ऊँचा किया जाएगा, ऊँचा उठाया जाएगा, महान बनाया जाएगा। मुझे नहीं पता कि आप यहाँ जिस तरह से कह रहे हैं, उससे ज़्यादा ज़ोरदार कुछ कह सकते हैं या नहीं। आप चाहे इसे प्रमाण और उत्थान कहें, हिब्रू में हम तीन अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

मैं खुद को किसी एक तक सीमित नहीं रखूँगा। मैं उन सभी का इस्तेमाल करूँगा, और मैं अपने 'अ' को भी इसमें शामिल करूँगा। उसे बहुत ऊँचा, ऊँचा और महान बनाया जाएगा।

वह सफल होगा। और फिर, श्लोक 14 की शुरुआत में, यह कहता है, जैसे बहुत से लोग तुम्हें देखकर भयभीत हो गए थे। और एक फ़ॉर्म का इस्तेमाल करता है, जिसे हस्ताक्षर के साथ पूरा करना ज़रूरी है।

हिब्रू में यह थोड़ा पेचीदा है, क्योंकि जिस शब्द का अनुवाद किया गया है, "कैन" दो बार इस्तेमाल हुआ है। तो यह कौन सा कैन है? मुझे लगता है, यह दूसरा है। तो बस उस चीज़ को छोड़ दीजिए जिसे मैं कोष्ठकीय सामग्री कहूँगा।

जैसे बहुत से लोग तुम्हें देखकर भयभीत हो गए थे, वे स्तब्ध हो गए थे। और इसलिए स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है, क्यों? क्यों? वह इसका उत्तर देने वाले हैं। लेकिन फिर, पद 15 में, वह इस विचार को पूरा करते हैं।

तो अब, वह, आप इसे कैसे अनुवाद करें, इस पर निर्भर करेगा, छिड़केगा या चौंकाएगा। बहुत से लोग भयभीत थे, लेकिन बहुत से लोग सकारात्मक रूप से प्रभावित होने वाले हैं। तो एक पत्राचार है।

जैसे हालात उसके लिए वाकई बहुत बुरे थे, वैसे ही हालात उसके लिए वाकई बहुत अच्छे भी होंगे, और सबको झटका लगेगा। लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा करे, उसे रुकना होगा।

उसे रुककर कहना होगा, जैसे कई लोग तुम्हें देखकर डर गए थे। उसे इस बात को उजागर करना होगा। और वह इसे अध्याय 53 में उजागर करेगा।

लेकिन यहाँ वह ऐसा करता है। वह हमें थोड़ा-बहुत अंदाज़ा देता है कि लोग उसे देखकर क्यों डर गए थे। वह इतना विकृत हो गया था कि अब वह इंसान जैसा नहीं दिखता था, यह इब्रानी में जो लिखा है उसका मेरा अनुवाद है।

उसका रूप इतना बिगड़ गया था कि अब वह इंसान नहीं लगता था। और मुझे नहीं लगता कि यह जन्मों में उसके दिखने के तरीके का वर्णन है। यह सेवक के जुनून की ओर इशारा करता है।

और मेल गिब्सन और उनकी फिल्म, "द पैशन ऑफ द क्राइस्ट" का शुक्रिया, और मुझे याद है जब मैंने वह फिल्म देखी थी, तो चर्च से हममें से कई लोग, हमारे पादरी और हमारे कुछ सेमिनरी प्रोफेसर, वहाँ गए थे, क्योंकि हम वापस आने वाले थे और सेमिनरी के प्रोफेसर फिल्म देखने आए सभी लोगों को एक तरह से जानकारी देने वाले थे। हमने सभी को आमंत्रित किया था। इसलिए कई लोग वापस आए, और मैं उन प्रोफेसरों में से एक था जिन्हें इसके बारे में थोड़ी बात करने का मौका मिला।

लेकिन मुझे याद है, जब मैंने यीशु के लहू, मसीह की पीड़ा और मसीह के दुःखभोग के बारे में पढ़ा था, तो मैंने सोचा था कि इस फ़िल्म के बाद मेरे लिए यह पहले जैसा कभी नहीं रहेगा, क्योंकि गिब्सन ने कोई कसर नहीं छोड़ी। सचमुच, उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। और याद है, जिम कैविज़ेल, जो मसीह में एक भाई थे, वैसे, जिम कैविज़ेल, जिन्होंने फ़िल्म के लिए अरामी भाषा बोलना सीखा था।

आप जिम कैविज़ेल को पहचान भी नहीं पाए। पता है, उन्होंने मेकअप वाकई बहुत अच्छा किया था। मतलब, यही तो सिखाया जाता है।

अब मैं यही सोचता हूँ, उस फिल्म को देखने और रोमनों के कारनामों वगैरह के बारे में पढ़ने के बाद। मेरा मतलब है, ये यीशु हैं। उन्हें जो कोड़े मारे गए, मुझे लगता है वो काफ़ी वास्तविक थे, और आप जानते हैं, कभी-कभी लोग इसी वजह से मर जाते थे।

तो अगर आपने "पैशन ऑफ़ द क्राइस्ट" देखी है, तो सोचिए। यहाँ यही दिखाया जा रहा है। यही वह पीड़ा है जो यह सेवक सह रहा है।

वैसे, यह एक अद्भुत अंश है। जब मैं सेमिनरी में अपने छात्रों को यशायाह पढ़ाता हूँ, तो सेमेस्टर प्रोजेक्ट चौथे सेवक गीत पर एक व्याख्यात्मक पेपर लिखना होता है, जहाँ वे इब्रानी भाषा में और सभी बारीकियों में जाते हैं, और यह बहुत ही अकादमिक हो सकता है, क्योंकि इस अंश में इब्रानी भाषा कुछ चुनौतियाँ पेश करती है। यह एक भविष्यसूचक कविता है।

यह उत्पत्ति ग्रंथ पढ़ने जैसा नहीं है। यह उससे कहीं ज़्यादा कठिन है, और मेरी एक छात्रा ने अपना पेपर जमा किया, और वह कहती है, "यह मेरे लिए एक भक्तिपूर्ण अभ्यास जैसा था।" वह कहती है, "जब मैंने यह पेपर पूरा किया, तब तक मेरी आँखों में आँसू आ गए थे।"

तो ये हैं यीशु। यहाँ हमारे प्रभु का वर्णन किया जा रहा है। उन्हें देखकर बहुत से लोग भयभीत हो गए थे क्योंकि उन्होंने इतनी यातनाएँ सहीँ कि अब वे इंसान भी नहीं लगते थे, विकृत, क्षत-विक्षत, बुरी तरह से पीटे गए, लगभग।

और इसमें कूस भी शामिल हो सकता है, लेकिन मैं कूस की तैयारी, यानी प्रारंभिक अवस्था के बारे में ज़्यादा सोच रहा हूँ। और फिर पद 15 कहता है, तो अब वह ऐसा करेगा, और यहाँ अनुवाद अलग-अलग होंगे। पारंपरिक अनुवाद यह है कि वह बहुत सी जातियों पर छिड़केगा।

और इसका प्रयोग अक्सर इसी क्रिया रूप में होता है, इसलिए आपको नहीं लगता कि इसमें कोई समस्या होगी। लेकिन दूसरी ओर, जब इस मुहावरे का प्रयोग होता है, जब आप किसी पर छिड़कते हैं, तो आमतौर पर छिड़कने वाली वस्तु से पहले एक पूर्वसर्ग होता है, और वह पूर्वसर्ग यहाँ नहीं है। और इसीलिए कुछ लोग कहेंगे, मुझे यकीन नहीं है कि यह पारंपरिक अनुवाद है।

अगर ऐसा है, तो ऐसा लगता है जैसे नौकर उसमें है, यह कविता है। हो सकता है कि पूर्वसर्ग छूट जाएँ। आप जानते ही हैं, कविता में बहुत सारे दीर्घवृत्त होते हैं, जहाँ कभी-कभी वे ऐसे शब्द छोड़ देते हैं जो निहित होते हैं।

और अगर यह छिड़काव है, तो मुझे लगता है कि सेवक अब एक पुरोहित की भूमिका में है, है ना? आप जानते हैं, वह राजा रहा है, वह निश्चित रूप से इन सेवक गीतों में एक पैगंबर है, और शायद यहाँ एक पुरोहिती आयाम पेश किया जा रहा है, क्योंकि अध्याय 53 में गीत में आगे चलकर कुछ पुरोहिती भाषा का प्रयोग होने वाला है। तो अगर आप उस दिशा में जाना चाहते हैं, तो ठीक है। बहुत से लोग उससे भयभीत थे, लेकिन वास्तव में, वह छिड़काव करने वाला है, वह कई राष्ट्रों को शुद्ध करने वाला है।

आप जानते हैं, पुराने नियम के अनुष्ठानों में, वे जूफ़ा लेते थे, और वे रक्त या जल लेते थे, और पुजारी या किसी और पर छिड़कते थे, यह एक अनुष्ठानिक कार्य था। और इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ अनुष्ठानिक शुद्धिकरण का सुझाव दिया गया है। और इसलिए अपने कष्टों और अपने कार्यों के माध्यम से, वह वास्तव में राष्ट्रों का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कराने जा रहा है।

और इसलिए शायद छिड़काव वाला रूपक काम करेगा, लेकिन हर कोई इससे खुश नहीं है। वे वाक्य रचना और उस तरह की चीज़ों के आधार पर आपत्ति करते हैं, और इसलिए वे "चौंकाने वाला" शब्द पढ़ना पसंद करते हैं। सेप्टुआजेंट में इसका कुछ समर्थन है, और इसलिए वे कह रहे हैं कि वे उसे देखकर चौंक गए थे, और अब वे एक अलग तरीके से फिर से चौंकने वाले हैं।

और इसलिए वे चौंका देने वाला शब्द सुझाएँगे, और कहेंगे, शायद यह एक समानार्थी शब्द है, एक दुर्लभ समानार्थी शब्द। मुझे लगता है कि पुराने शब्दकोश BDB ने कुछ अरबी समर्थन का हवाला दिया था, लेकिन इसने कई देशों को चौंका दिया। यह शायद संदर्भ में बेहतर काम करता है, लेकिन यह वहाँ मौजूद समस्याओं के बावजूद, छिड़कने वाले शब्द जैसा ही लगता है।

तो मैं आपको बस इस बात से अवगत कराना चाहता हूँ कि हमारे पास इसके लिए दो विकल्प हैं। तो अब वह बहुत सी जातियों पर छिड़केगा, उन्हें परमेश्वर से मिलाएगा, या उन्हें चौंका देगा। पाठ कहता है कि राजा उसके उत्कर्ष से स्तब्ध रह जाएँगे।

सचमुच, पाठ कहता है कि राजा अपना मुँह बंद कर लेंगे। वे अवाक रह जाएँगे। मैं इसे यूँ कहूँ तो, मैं उनके उत्कर्ष से स्तब्ध रह जाऊँगा।

इब्रानी लोग न्यायप्रिय हैं; वे अपना मुँह बंद कर लेंगे, वे अवाक रह जाएँगे। चार, वे कुछ ऐसा देखेंगे जो उन्हें पहले नहीं बताया गया था, और वे कुछ ऐसा समझेंगे जिसके बारे में उन्होंने पहले

नहीं सुना था। हो सकता है कि उन्होंने कुछ ऐसा देखा हो जिसके बारे में उन्हें पहले नहीं बताया गया था।

उन्होंने कुछ ऐसा समझ लिया होगा जिसके बारे में उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था। उन्होंने उस सेवक को बस एक पीड़ित व्यक्ति के रूप में देखा था, और उन्होंने वास्तव में यह उम्मीद नहीं की थी कि उसे इतने ऊँचे पद पर बिठाया जाएगा, क्योंकि प्रभु ने घोषणा की थी, " मेरा सेवक सफल होगा। उसे बहुत ऊँचा स्थान दिया जाएगा।"

हाँ, मुझे पता है कि वह विकृत और विकृत था, लेकिन वह राष्ट्रों को चौंका देगा, क्योंकि वह उनके सामने ऊँचा किया जाएगा। और आप 13वें पद में भी ऊँचा किए जाने के बारे में उन शब्दों को देख सकते हैं, जिन्हें एक राजा के उनके ऊपर ऊँचा किए जाने के संदर्भ में समझा जाता है। और राजा बस, बस इसे समझ नहीं पाएँगे।

यह उनके लिए एक झटका होगा। वह? वह सबका राजा बनने वाला है? पोंटियस पिलातुस के बारे में सोचो। पोंटियस पिलातुस के बारे में सोचो जिस दिन वह यीशु से मिला था, या हेरोदेस के बारे में सोचो जिस दिन वे यीशु से मिले थे।

लेकिन इतिहास में सभी प्रकार के राजाओं, शासकों और लोगों ने यीशु को अस्वीकार किया है और उनके अनुयायियों को सताया है। जब वे उसके सामने खड़े होंगे और हर कोई घुटने टेकेगा और उन्हें एहसास होगा कि जिसे हमने अस्वीकार कर दिया है, या जिसे हमने खारिज कर दिया है, वह सबका राजा है, तो उन्हें बहुत बड़ा झटका लगेगा। तो ये पहले तीन पद थे, और अब, अध्याय 53, पद 1 में, हमें नाटक में नए पात्र मिलते हैं।

मेरे अनुवाद के अनुसार, किसने विश्वास किया होगा, किसने विश्वास किया होगा जो हमने अभी सुना? प्रभु की शक्ति उसके द्वारा कब प्रकट हुई? और आगे के पदों में, हमारे पास एक समूह होगा जो बोल रहा है, और मूलतः वे जो कहने जा रहे हैं, वह यह है कि हमने इसकी अपेक्षा नहीं की थी। हमने अभी जो सुना वह अध्याय 52, पद 13 से 15 में राजा के उत्कर्ष की घोषणा है, जिसने राष्ट्रों के राजाओं को अवाक कर दिया, और राष्ट्रों को स्तब्ध कर दिया। और अब यह समूह, जो कोई भी है, वे कह रहे हैं, किसने इस घोषणा पर विश्वास किया होगा जो हमने अभी सुनी? प्रभु की शक्ति उसके द्वारा कब प्रकट हुई? और मैं यह तर्क देने का प्रयास करने जा रहा हूँ कि ये मुख्य रूप से परमेश्वर के वाचा के लोग हैं।

यह इस्राएल है। यह भविष्यवक्ता लोगों की ओर से बोल रहा है, जैसा कि यशायाह 6 में है। और इसलिए वे अपना आश्चर्य व्यक्त कर रहे हैं। अब, इसका उल्लेख नए नियम में किया गया है।

किसने विश्वास किया है? पौलुस इसे अपनी परिस्थिति और संदेश के प्रचार पर लागू करता है, और मुझे लगता है कि अगर आप इस पर थोड़ा विचार करें, तो आप इसे समझ सकते हैं। इस अंश का यही सही प्रयोग है, लेकिन मुझे लगता है कि कभी-कभी इसका अर्थ एक निराश प्रचारक से लगाया जाता है। हमारी बात किसने सुनी? हमारी रिपोर्ट पर किसने विश्वास किया? मुझे पूरा यकीन नहीं है कि इस संदर्भ में ऐसा ही है।

हमने अभी जो सुना, हमारी रिपोर्ट, उस पर कौन यकीन करता? यह वह रिपोर्ट हो सकती है जो आप देते हैं, लेकिन यह वह रिपोर्ट भी हो सकती है जो आपने सुनी हो। और अगर आप पहले तीन छंदों को गीत के परिचय के रूप में ठीक से समझते हैं, तो मुझे लगता है कि वे इसी की बात कर रहे हैं। हमने जो रिपोर्ट सुनी, जो अभी-अभी हमारे पास आई, उस पर कौन यकीन करता? हमें इसकी उम्मीद नहीं थी।

हमें नौकर के इस तरह के सम्मान की उम्मीद नहीं थी। और वैसे, मैंने एक उपदेश दिया था जिसे मैं यशायाह 53 के चौथे सेवक गीत का नाम देता हूँ, जो एक कंगाली से अमीरी की कहानी है, क्योंकि हाँ, नौकर ने बहुत कष्ट सहे थे, कंगाली में था, और वाह, उसे इस ऊँचे पद पर बिठाया गया। यह कंगाली से अमीरी की कहानियों में से एक है।

तो वे कहते हैं, प्रभु की शक्ति उसके माध्यम से कब प्रकट हुई? और इसका शाब्दिक अर्थ है, प्रभु का भुजबल कब प्रकट हुआ? तो प्रभु का भुजबल। इसका क्या अर्थ है? खैर, मैंने इसे प्रभु की शक्ति के रूप में व्याख्यायित किया, क्योंकि यदि आप यशायाह में अन्यत्र प्रभु के भुजबल के प्रयोग का अध्ययन करें, तो यह प्रभु की शक्ति और सामर्थ्य का उल्लेख करता है, और यह अक्सर एक योद्धा के रूप में प्रभु की शक्ति का उल्लेख करता है। आप जानते हैं, इस सांस्कृतिक संदर्भ में, युद्धों में, बहुत अधिक हाथापाई होती थी, और इसलिए योद्धा के पास तलवार चलाने, धनुष को पीछे खींचने के लिए एक मजबूत भुजा होनी चाहिए थी, और इसलिए योद्धाओं का मजबूत होना आवश्यक था।

उन्हें एक मजबूत भुजा की ज़रूरत थी। और इसलिए यशायाह में कहीं और, जब प्रभु की भुजा का इस्तेमाल किया गया है, तो वह प्रभु की सैन्य शक्ति की ओर इशारा कर रहा है। और इसलिए वे कह रहे हैं, ठीक है, हमने उसमें परमेश्वर की शक्ति को काम करते नहीं देखा।

अब, परमेश्वर की शक्ति यीशु में कार्यरत थी, उसकी चंगाई सेवा और उस सब के माध्यम से, लेकिन अंततः उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया, और इसलिए उन्होंने उसमें प्रभु की सैन्य शक्ति को कार्य करते हुए नहीं देखा, क्योंकि वह राष्ट्रों को हराने के लिए उस भूमिका में नहीं आया था। वह पहली बार उस तरह नहीं आया जैसे वह दूसरी बार आता। ऐसा नहीं हुआ।

और इसलिए उन्होंने प्रभु के कार्य करने का कोई प्रमाण नहीं देखा। उन्होंने जो देखा, वह यहाँ है। वे इसका वर्णन पद 2 में करते हैं। वह परमेश्वर के सामने एक टहनी की तरह, सूखी ज़मीन से निकली जड़ की तरह उग आया।

उनका कोई भव्य रूप या वैभव नहीं था जो हमारा ध्यान खींचे, न ही कोई विशेष रूप-रंग था जिससे हम उनका अनुसरण करना चाहें। यीशु लोगों के लिए आकर्षक थे। उनका संदेश बहुत से लोगों के दिलों में गूँजता था।

मुझे लगता है कि कई बार वे सिर्फ़ इसलिए उनके पीछे चले जाते थे क्योंकि वे चंगे होना चाहते थे। बहुत से लोग उनके पीछे इसलिए चलते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि वे सैन्य मसीहा होंगे जो उन्हें रोम से मुक्ति दिलाएँगे और उनके दुश्मनों पर बड़ी जीत दिलाएँगे। लेकिन धीरे-धीरे, लेकिन

निश्चित रूप से, उनके अनुयायी चले गए, यहाँ तक कि एक दिन वे सब भी चले गए, और यीशु ने कहा, " क्या तुम भी चले जाओगे?" और पतरस ने कहा, " हम कहाँ जाएँ ?" आपके पास जीवन के वचन हैं।

तो मुझे लगता है कि यह इसी बात को दर्शाता है। कुल मिलाकर, जब सब कुछ कहा और किया जा चुका है, तो उस यीशु के बारे में क्या जो हाल ही में यहाँ आए, गए और सूली पर चढ़ाए गए? आम आदमी यही कहेगा, अरे, उनमें कुछ दिलचस्पी तो थी, लेकिन असल बात यह है कि वे परमेश्वर के सामने एक टहनी की तरह, सूखी ज़मीन से निकली जड़ की तरह उग आए। असल में वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था जो हमें उनका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करे।

तो उन्होंने इसे आते हुए नहीं देखा। उन्होंने सेवक के उत्कर्ष को आते हुए नहीं देखा। यही उन्होंने देखा।

वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो इतना प्रभावशाली था। वह लोगों द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत था, जिसने दर्द सहा था और बीमारी से परिचित था। लोग उससे मुँह छिपाते थे।

उनका तिरस्कार किया जाता था, और हम उन्हें तुच्छ समझते थे। तो, यहाँ कुछ रूपक है। मेरा मतलब है, यह निश्चित रूप से वास्तविकता है, उन्होंने दर्द का अनुभव किया, लेकिन यह बीमारी वाली बात, मुझे नहीं लगता कि यह कोई मूल भाव है जो हम यीशु के साथ देखते हैं, कि वह एक बीमार व्यक्ति थे, हर समय बीमार।

लेकिन वे उसका वर्णन करने के लिए इसी कल्पना का इस्तेमाल कर रहे हैं। वह एक बीमार व्यक्ति की तरह था, यहाँ तक कि उसे एक गंभीर बीमारी भी थी। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कहा है कि यहाँ कुष्ठ रोग की पृष्ठभूमि है।

नौकर बर्नार्ड ड्यूम एक कोढ़ी था। वह बीमार था, और लोग उसकी तरफ देखना भी नहीं चाहते थे। उसे तुच्छ समझा जाता था, तुच्छ समझा जाता था, लेकिन वह बीमारी का प्रतीक था।

आप जानते हैं, कभी-कभी बीमार लोग, वे ठीक नहीं दिखते, और उनकी बीमारी और पीड़ा को देखना मुश्किल होता है, और उन्हें तिरस्कृत भी किया जा सकता है, खासकर प्राचीन दुनिया में। याद कीजिए, यीशु के शिष्यों द्वारा अंधे व्यक्ति के बारे में पूछा गया प्रश्न। पाप किसने किया? उसने या उसके माता-पिता ने? अय्यूब के दोस्तों ने।

अय्यूब के तथाकथित मित्र, जब उसके पास आते हैं, तो मान लेते हैं कि उसने बहुत बड़ा पाप किया है। दरअसल, एलीपज को लगता है कि उसे सब कुछ समझ आ गया है। अय्यूब ने गरीबों की उपेक्षा की है, और इसीलिए परमेश्वर ने उसे गरीबी में धकेल दिया है।

आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत। वे आकर कहते हैं, "अय्यूब, अगर तुमने बहुत पाप न किया होता, तो तुम्हें ऐसी पीड़ा न झेलनी पड़ती, क्योंकि परमेश्वर इसी तरह दुनिया चलाता है। वह धार्मिकता को पुरस्कार देता है, और दुष्टता को दण्ड देता है।"

तुम्हें साफ़ सज़ा मिल रही है। तुमने क्या ग़लत किया? तुम्हें अपने पाप स्वीकार करने होंगे। देखो, इस तरह के माहौल में, लोग बड़ी बीमारी को भी बड़ा पाप समझते हैं, इसलिए उन्होंने उसकी तरफ़ देखा, उन्होंने देखा कि वह बीमार है, उसे दर्द हो रहा है।

अरे यार, उसने क्या किया? और उन्होंने मान लिया कि उसे उसके किए की सज़ा मिल रही है, और यही यहाँ सबसे बड़ा आश्चर्य है, क्योंकि बेशक, अगर आप इसे हर स्थिति में लागू करें तो यह धर्मशास्त्र ग़लत है। अय्यूब के दोस्त ग़लत थे, और उन्होंने एक निर्दोष व्यक्ति पर पापी होने का आरोप लगाया, और इसीलिए परमेश्वर ने अंत में उन्हें कड़ी फटकार लगाई, और उन्हें तभी बख़्शा जब अय्यूब उनके लिए मध्यस्थता करेगा, और परमेश्वर एक धर्मी व्यक्ति है, वह क्षमा करता है, और वह ऐसा करता भी है। तो वे सेवक को देख रहे हैं, और सोच रहे हैं, इस आदमी ने, इस आदमी ने कुछ ऐसा किया है जिससे परमेश्वर सचमुच नाराज़ हो गया है, और इसलिए हम उससे कोई संबंध नहीं रखना चाहते।

लेकिन फिर, पद 4 में, वे बोल रहे हैं, और वे उस बिंदु पर पहुँच रहे हैं जहाँ उन्हें इस सब की सच्चाई का एहसास हो रहा है। इसलिए यह तय करना मुश्किल है कि इतिहास में ऐसा कब होगा, क्योंकि यह भविष्यसूचक कविता है, और यह भविष्य की ओर देखती है, और भविष्य के किसी भी कालक्रम के संदर्भ में यह अस्पष्ट है, लेकिन मैं यहाँ इस्राएल को देख रहा हूँ, कम से कम वे जो विश्वास करने वाले हैं, और रोमियों 11 उनके उस स्थान पर आने की बात करता है जहाँ वे विश्वास करते हैं, और वे प्रभु के पास वापस आते हैं। रोमियों 11 में, पूरा इस्राएल विश्वास करेगा, या जैसा कि जकर्याह वर्णन करता है, जब उन्हें एहसास होगा कि उन्होंने परमेश्वर को छेदा है, और वे वापस आकर पश्चाताप करेंगे, रोएँगे और विलाप करेंगे, और इसलिए मैं इसे इस्राएल के रूप में देखता हूँ जहाँ उन्हें एहसास होगा कि पीड़ित सेवक वास्तव में प्रभु का सेवक था, और वह अपने पापों के कारण नहीं, बल्कि हमारे पापों के लिए पीड़ित था।

और इसलिए, मैं इसे रोमियों 11 से जोड़ना चाहता हूँ, आप जानते हैं। या जब भी कोई यहूदी व्यक्ति, या कोई भी व्यक्ति, जिसने शायद यीशु को इतनी गंभीरता से नहीं लिया हो, और उनके दुखों को नज़रअंदाज़ कर दिया हो, उसे एहसास होता है कि नहीं, और सुसमाचार का संदेश यहीं है, तो उन्हें सुसमाचार का संदेश समझ में आता है कि वह हमारे पापों के लिए दुख उठा रहे थे। यहाँ एक प्रतिस्थापनात्मक प्रायश्चित्त चल रहा है।

तो, पद 4 से शुरू करते हुए, वे स्वीकार करते हैं कि अब उन्हें क्या सच लगता है, और वे अतीत में कैसे ग़लत थे, लेकिन उसने हमारी बीमारियों को उठा लिया, उसने हमारी पीड़ा को झेला, हालाँकि हमने सोचा कि उसे दंडित किया जा रहा है, परमेश्वर द्वारा हमला किया जा रहा है, और उसके किए की सज़ा दी जा रही है। तो, पहचान देखिए? हमने सोचा कि वह बस अपने पाप के लिए कष्ट सह रहा है; इसीलिए लोग इस तरह बीमार पड़ते हैं, लेकिन वह हमारी बीमारियों और हमारे दर्द को उठा रहा था। और यह बहुत दिलचस्प है, क्योंकि वही क्रियाएँ जो उठाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं, हमें इब्रानी भाषा में दो अलग-अलग क्रियाएँ मिलती हैं, जिनका इस्तेमाल बीमारी और दर्द के संबंध में किया जाता है।

अगर आप श्लोक 11 और 12 में जाएँ, अलग-अलग वस्तुओं के बारे में, तो उसने उनके पाप उठाए, उसने उनके पाप उठाए, उसने बहुतों के पाप उठाए। इसलिए अगर आप बाद वाले श्लोकों को श्लोक 4 से जोड़ते हैं, तो आपको पता चलता है कि बीमारी और दर्द पाप का नतीजा थे। मेरा मतलब है, आखिरकार, हम बीमार पड़ते हैं और मरते हैं क्योंकि हमने पाप किया है, लेकिन उसके अपने व्यक्तिगत पाप का नहीं।

तो वह उनकी बीमारियों और दर्द को दूर कर रहा था, इसका असली मतलब यह है कि उसने उनके पापों की सज़ा, उनके पाप का दोष अपने ऊपर ले लिया था, और इसलिए उसने अपने दुखभोग और क्रूस पर पाप के दोष के परिणाम भुगते। और इसलिए यह मान्यता है कि हमने सब कुछ गलत समझा था। इस पर कौन विश्वास करता? यह एक सदमा है।

और वे आगे कहते हैं, पद 5 में, वह हमारे विद्रोही कर्मों के कारण घायल हुआ। और वहाँ, वह पेशा शब्द का प्रयोग करता है, जो पाप के लिए इब्रानी शब्द है, पेशा, जो पाप को विद्रोह के रूप में दर्शाता है। वह घायल हुआ, एक बहुत ही कठोर शारीरिक भाषा के साथ जो उसकी वास्तविकता का अनुमान लगाती है।

यीशु का शरीर क्षत-विक्षत था। वह हमारे विद्रोही कर्मों के कारण घायल हुआ था। हमने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था, और वह कुचला गया, कठोर भाषा में, हमारे पापों के कारण कुचला गया, हमारे विद्रोही कर्मों के कारण, हमारे पापों के कारण कुचला गया।

उसने वह सज़ा सहन की जिससे हम ठीक हो गए। तो हमारी शांति की सज़ा वही है जो इब्रानी में कहा गया है। इसका मतलब है कि सज़ा वही है जिसे हम परिणाम का संबंधकारक कहते हैं।

उसे सज़ा मिली और नतीजा यह हुआ कि हम ठीक हो गए। और इसके लिए इब्रानी शब्द है शालोम। आप जानते हैं, हम किसी को शालोम कहते हैं, शांति, लेकिन शालोम का मतलब अक्सर पूर्णता होता है।

इसका इस्तेमाल कोई भी व्यक्ति कर सकता है जो चंगा हो चुका हो। और इसलिए उसने हमारे पापों की सज़ा अपने ऊपर ले ली। वह घायल हुआ, कुचला गया, उसका शालोम बिखर गया, लेकिन इस तरह सज़ा सहने से हमें शालोम मिला।

हम पापी थे, लेकिन हमें पुनर्स्थापित किया गया, हम चंगे हुए, और उसके घावों के कारण, हमें चंगाई मिली। हम चंगे हो गए हैं। इसलिए वे इसके प्रतिस्थापनात्मक स्वरूप को समझ रहे हैं।

और फिर छठे श्लोक में, वे कहते हैं, हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे। हम में से हर एक अपने-अपने रास्ते से भटक गया था, लेकिन प्रभु ने हम सब के पापों को उस पर थोप दिया। यह अनुवाद उससे थोड़ा अलग है जो आप कभी-कभी पारंपरिक अर्थों में पढ़ते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह उस पर किसी बोझ के पड़ने का चित्रण है।

यह शायद किसी शिकारी के हमले की तस्वीर है। अच्छा, ज़रा सोचिए, हम सबकी।

और मैं इसे इस तरह देखता हूँ कि पैगंबर हमारी ओर से, हम लोगों की ओर से बोल रहे हैं। यहाँ पैगंबर पापी राष्ट्र की ओर से बोल रहे हैं। वह उनके साथ अपनी पहचान बना रहे हैं, और उनका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जैसा कि उन्होंने यशायाह 6 में किया है। मैं पापी लोगों के बीच रहता हूँ।

मेरे होंठ गंदे हैं। मैं उनसे दूषित हो गया हूँ। हम सब ईश्वर के सामने दोषी हैं।

हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे। भेड़ें ऐसा करने के लिए प्रवृत्त होती हैं। वे बस भटक जाती हैं, आप जानते हैं, भटकी हुई भेड़ें, भेड़ों की तरह ही भटक जाती हैं।

और हम में से हर एक, वह हम में से हर एक पर ज़ोर देते हुए, एक हिब्रू मुहावरे का इस्तेमाल करता है। एक आदमी, जो हम में से हर एक है, अपने रास्ते से भटक गया था। हम उस रास्ते पर चले गए जिसे हमने अपने लिए सही रास्ता समझा था।

तो भटकती भेड़ें, ज़रा सोचिए। भटकती भेड़ें बहुत ही असुरक्षित होती हैं क्योंकि वे अक्सर अलग-थलग पड़ जाती हैं, और वे किसी भी शिकारी के लिए निशाना बन जाती हैं। चाहे भेड़िया हो, शेर हो, भालू हो, कुछ भी हो।

तो वे कमज़ोर हैं। हम भटक गए। हम अपने-अपने रास्ते चले गए।

हम अपने नैतिक मानदंडों और उस तरह की चीज़ों का पालन करते रहे, और हम रास्ते से भटक गए, और हम असुरक्षित थे। लेकिन प्रभु ने हम सबके पापों को अपने ऊपर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। हमारा पाप, मानो, हमें नष्ट करने के लिए तैयार था।

हमारे पापों ने हमें ऐसी स्थिति में डाल दिया है जहाँ एक शिकारी हमें मार सकता है, आप जानते हैं, यहाँ वास्तविकता और रूपक को एक तरह से मिला दिया गया है। लेकिन प्रभु ने हमारे पापों से उस पर आक्रमण करवाया, जिसका अर्थ है कि हमारे पापों के अपराधबोध ने उस पर आक्रमण किया। शिकारी ने उस पर आक्रमण किया।

उन्होंने हस्तक्षेप किया, और हमारे लिए ज़िम्मेदारी उठाई। मुझे लगता है कि यही बात यहाँ भी लागू होती है, कि हम सभी की भाषा बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम आगे इस बारे में बात करेंगे कि यह सेवक कौन है। हम उन कुछ तर्कों पर भी चर्चा करेंगे जो यह साबित करते हैं कि यह यीशु नहीं है, और कुछ लोग कहेंगे, या तो यह धर्म अवशेष है, या फिर यह भविष्यवक्ता है।

नहीं, उन्होंने कहा हम सब। हम सबका। और इस मामले में, मुझे लगता है कि सबका मतलब सब है।

और हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे और भटक गए थे, और प्रभु ने हमारे पापों को उस पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। इसलिए हम शिकारी, यानी पाप के अपराध से नष्ट नहीं हुए। पद 7 में, उसके साथ कठोर व्यवहार किया गया और उसे कष्ट पहुँचाया गया, परन्तु उसने अपना मुँह तक नहीं खोला।

अब, यीशु ने पिलातुस और यहूदी महासभा के सामने कुछ बातें कहीं। उसने कुछ बातें कहीं, लेकिन याद कीजिए, पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि उसने अपना बचाव करने की कोशिश नहीं की। पिलातुस ने कहा, " क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं तुम्हारा जीवन अपने हाथ में रखता हूँ ?" यीशु ने कहा, " अच्छा , तुम्हारे पास जो भी अधिकार है, वह परमेश्वर की ओर से है।"

तो यीशु ने बात तो की, लेकिन उन्होंने बात नहीं की, उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया, और वे दुःखी हुए, लेकिन उन्होंने कोई विरोध नहीं किया। वे उस सज़ा को, उस दर्द को स्वीकार कर रहे हैं जो वे उन पर ला रहे हैं। और एक बार फिर, भविष्यवक्ता भेड़ों की कल्पना का प्रयोग करते हैं।

जैसे किसी मेमने को वध के लिए ले जाया जा रहा हो। जैसे किसी भेड़ को उसके ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रखा गया हो। उसने अपना मुँह तक नहीं खोला।

तो भेड़ कोई आपत्ति नहीं करेगी, और वह ऐसा ही था। वह वध के लिए जाते हुए एक खामोश मेमने की तरह था। और वैसे, कुछ लोग वहाँ प्रायश्चित की भाषा देखना पसंद करते हैं, लेकिन जिस शब्द का अनुवाद वध करना किया गया है, वह बलिदान के लिए सामान्य शब्द नहीं है।

यह एक अलग शब्द है। इसलिए भेड़ों का वध कई कारणों से किया जा सकता है, और जब आप पुराने नियम में इस शब्द के इस्तेमाल पर गौर करते हैं , तो इस शब्द का इस्तेमाल भोजन के लिए भेड़ों का वध करने या किसी भी अन्य उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। इसलिए यह बलिदान का उतना सीधा संदर्भ नहीं है जितना आप सोच रहे होंगे।

और यह समानता यही दर्शाती है। ऊन कतरने वालों के सामने चुप रहना कोई बलिदान नहीं है। बात यह है कि वह बिल्कुल एक मेमने या भेड़ जैसा है।

जब आप ये सब करते हैं तो वे आपत्ति नहीं करते, और वह भी ऐसे ही थे। लेकिन साथ ही, मुझे नहीं लगता कि यीशु की मृत्यु को एक बलिदान के रूप में देखना गलत है। और मुझे लगता है कि यहीं पर हम अपना तीसरा व्याख्यान समाप्त करेंगे, और अगले व्याख्यान में इस पर चर्चा करेंगे, और फिर हम इस गीत के महत्व पर कुछ सारांश और चिंतन करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म और यशायाह के सेवक गीतों पर उनकी शिक्षाएँ हैं। यह सत्र 3, प्रभु का पीड़ित सेवक, भाग अ है। यशायाह 50:4-6 और 52:12-53:12।